

दिव्य लालु ज़ाओ (१२९)

हलो हलो मिली मिली गुण गायूं खिली खिली
अमड़ि खे लालु ज़ाओ लालु ज़ाओ लालु ज़ाओ
वाह वाह वाह सूरति बालक जी दिव्य कला॥

लालण जे जन्म जी बहार आ कमलनि खां बि कोमलु कुमार
आ

रूपु द्रिसी सभेई चवनि भला भला—वाह वाह वाह

जिति किथि हर्ष जी हुबकार आ अनहद नाम जी झंकार आ
आशीश देई चवनि दूर थिए बला—वाह वाह वाह

सूरज जियां लाल जो प्रताप आ

मिटी वयो जग मा अविद्या पाप आ

जेद्राहुं तेद्राहुं सावा थिया सिक जा नसला—वाह वाह वाह

हर कंहि रसना ते हरी नाम आ

जग जंजालु छुटो अन्दर में आराम आ

वसंदा रहनि साहिब जा सतिसंग थला—वाह वाह वाह

सुधा सरसु कथा में स्वाद आ दिल में दीदार जो अहिलादु
आ

अमड़ि जा सुक्रत सभेई फूलिया फला—वाह वाह वाह